एशियाका पैग़ाम

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

भाग ११ — सम्पादक – प्यारेलाल — अंक १२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २० अप्रैल, १९४७

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

दुनियाको अेक करनेकी कोशिश कीजिये

[गांधीजी जबतक दिल्लीमें रहे, अुन्होंने दो बार अेशियाअी कान्फरेन्समें हिस्सा लिया। मंगलवार ता० १–४–'४७ को जब वे कान्फरेन्समें पहली बार शामिल हुअे तब अुन्होंने कोअी तक़रीर नहीं की, मगर कुछ नुमाअिन्दों द्वारा पूछे गये सवालोंके जवाब दिये। वे सवाल और जवाब नीचे दिये जाते हैं। आखिरी जलसेमें की हुअी अुनकी तक़रीर अिसी अंकमें दूसरी जगह दी गअी है। — संपादक]

पूरे जलसेके अुस दिनके सदर, अाज़रबैजानके नुमाअिन्दे मि० यूसोटॉफ़ने गांधीजीसे दरख्वास्तकी कि वे कुछ बोलें।

गांधीजीने जवाब दिया कि मैं दो अप्रैलको होनेवाली कान्फरेन्सके आखिरी जलसेमें शामिल होअूँगा और तभी बोलूँगा। फिलहाल अगर मेम्बरान मुझसे कोअी सवाल पूछना चाहें, तो मैं अुनके सिर्फ़ जवाब दूँगा।

सपना सच किया जा सकता है

गांधीजीसे पूछा गया कि — क्या आप अेक दुनियाके अुसूलमें विश्वास करते हैं? और क्या मौजूदा हालतमें अुसमें कामयाब होना मुमकिन है? गांधीजीने जवाब दिया — "अगर यह दुनिया अेक नहीं होती, तो मैं अुसमें रहना न चाहूँगा। अलबत्ता अपने जीतेजी मैं अिस सपनेको सच करना चाहूँगा।"

अुन्होंने आगे कहा — "मुझे अुम्मीद है कि अेशियाके अलग अलग मुल्कोंसे यहाँपर आये हुअे सब नुमाअिन्दे अिस बातकी पूरी पूरी कोशिश करेंगे कि सारी दुनिया अेक हो जाय। यह मक़सद हासिल करनेके लिअे आपको अिसके तरीक़ों और साधनोंपर विचार करना चाहिये।

"अगर आप पक्के अिरादेसे काम करें, तो अिसमें कोअी शक नहीं कि हमारी अपनी पीढ़ीमें ही हम अिस सपनेको सचमुच सच कर लेंगे।"

चीनके डॉ० हानलिंगने गांधीजीसे पूछा कि पूरे अेशियाकी अेक संस्था क़ायम करनेकी दरख्वास्तके बारे में आपकी क्या राय है?

गांधीजीने जवाब दिया — "यह सवाल सचमुच बहुत सुन्दर है। मगर अिस विषयकी अपनी लाअिल्मी (अज्ञानता)को मैं मंज़ूर करता हूँ। मैं आपसे सचमुच माफ़ी चाहता हूँ। यह कान्फरेन्स होनेके बहुत दिनों पहले पण्डित नेहरूने मुझसे पूछा था कि मैं अिसमें शामिल हो सकूँगा या नहीं। यह कान्फरेन्स जितनी अहम साबित हुअी है, अुतनी अिससे अुम्मीद नहीं की जाती थी। अुस वक़्त मुझे पण्डित नेहरूसे कहना पड़ा था कि मुझे अफ़सोस है, मैं नहीं आ सकूँगा। जब नये वायसराय लॉर्ड माअुन्ट बेटनने मुझे मिलनेके लिअे बुलाया, तो मैं अिन्कार न कर सका। अैसा करना मेरे स्वभावके खिलाफ़ होता। वायसरायने मुझसे मिलते ही कहा कि जब दिल्लीमें अेशियाअी कान्फरेन्स चल रही हो, अुस वक़्त मुझे दिल्ली बुलानेका श्रेय दरअसल अुनको है। और मैंने वायसरायको जवाब दिया: "मैं आपका क़ैदी हूँ। मगर मैं पण्डित नेहरूका भी क़ैदी हूँ, क्योंकि आखिरकार वे आपके व्हाअिस प्रेसिडेण्ट ही तो हैं।"

"खतोकिताबतके ज़रिये मैं दुनियाके क़रीब क़रीब सारे हिस्सोंको जानता हूँ और क़ुदरती तौरपर अिसलिअे अेशियाअी मुल्कोंसे भी मैं वाक़िफ़ हूँ, मगर निजी तौरपर मैं आपमेंसे बहुत कमको जानता हूँ — शायद किसीको भी नहीं। मुझे शक है कि अिस विषयमें मैं आपसे कोअी कामकी बात कह सकूँगा। मगर यह सवाल मुझे बहुत अच्छा लगता है। मुझसे अभी पूछे गये सवालकी कुछ बातोंपर पण्डित नेहरू कल चर्चा कर चुके थे। यह अेक महान् अवसर (मौक़ा) है। हमारी तवारीखमें हिन्दुस्तानकी ज़मीनपर अिस तरहकी यह पहली कान्फरेन्स हो रही है। मुझे अफ़सोस है कि सबसे पहले मुझे यहाँ होनेवाली वारदातों और अुन हालतोंका ज़िक्र करना पड़ता है, जिन्हें हम आज देख रहे हैं। आपसमें किस तरह शान्ति बनाये रखें, अिसे हम नहीं जानते। हममें अितने झगड़े हैं, जिन्हें हम आपसमें अिन्सानी और दोस्ताना तरीक़ोंसे सुलझा नहीं सकते। हम सोचते हैं कि जंगली तरीक़े अख़्तियार किये बग़ैर हमारा काम ही नहीं चल सकता। यह अेक अैसा तजरबा है, जिसे, मैं चाहूँगा कि आप अपने अपने मुल्कोंको न ले जायँ। अिसके बजाय मैं चाहता हूँ कि आप अुसको यहीं दफ़न कर जायँ।

हिन्दुस्तान अब मुकम्मिल आज़ादीके दरवाज़ेपर खड़ा हुआ है। हिन्दुस्तान अुन सबसे आज़ाद होना चाहता है, जो अिस मुल्कपर क़ब्ज़ा करना चाहते हैं। हम अपने सिरसे अेक मालिकको हटाकर दूसरा मालिक नहीं लादना चाहते। अपनी ज़मीनपर हम ख़ुद मालिक बनना चाहते हैं, अगरचे मुझे अिस बातका पूरा अितमीनान नहीं है कि यह किस तरह हो सकेगा। हम सिर्फ़ अितना ही जानते हैं कि हमें अपना फ़र्ज़ अदा करना चाहिये और नतीजा अिन्सानपर नहीं, बल्कि ख़ुदापर छोड़ देना चाहिये। अिन्सानको अपनी क़िस्मत ख़ुद बनानेवाला कहा जाता है। यह अेक हद तक सही है। अिन्सान तभी तक अपनी क़िस्मत ख़ुद बना सकता है, जब तक वह महान् ताक़त, जो हमारे सारे अिरादों और तदबीरोंको नाकाम करके, अपनी मर्ज़ी पूरी करती है, अुसे अैसा करने दे।

हक़ या सत्य ही ख़ुदा है

अुस महान् ताक़तको मैं अल्लाह, ख़ुदा या गॉड कहकर नहीं पुकारता, मैं अुसे हक़ या सत्य कहता हूँ। मेरे लिअे तो सत्य ही भगवान् है और वही हमारी सारी तदबीरोंको नाकाम बनाता है। पूर्ण सत्य तो सिर्फ़ अुस महान् ताक़तमें — जिसे मैं सत्य कहता हूँ — समाया हुआ है। बचपनसे ही मुझे सिखाया गया था कि सत्य अगम्य है, यानी वह चीज़ है, जिस तक आप पहुँच नहीं सकते। अेक महान् अंग्रेज़ने मुझमें यह यक़ीन पैदा किया था कि अीश्वर जानकारीसे परे है। अुसे जाना जा सकता है, मगर वहीं तक, जहाँ तक हमारी बुद्धि पहुँच सकती है।

सज्जनो, आप लोग यहाँपर अेशियाके अलग-अलग हिस्सोंसे आये हुअे हैं। और अिसी अुत्साह और दिलचस्पीके साथ आकर आप सब सालाना या हर तीसरे या चौथे साल कान्फरेन्स करें। आप लोग अैसी सभाओंकी मीठी स्मृतियाँ (यादें) अपने साथ अपने मुल्कोंको लेते जायँ और वहाँ सत्यका महल खड़ा करनेके लिअे कोअी कोशिश अुठा न रखें।

www.vinoba.in

हमारा मक़सद

यहाँपर पूरे अेशियाके नुमाअिन्दे अिकट्ठा हुअे हैं; सो क्या अिसलिअे कि हम यूरोपके खिलाफ़, अमेरिकाके खिलाफ़ या ग़ैर-अेशियाअी मुल्कोंके खिलाफ़ जंग छेड़ना चाहते हैं? बहुत ज़ोरोंसे मैं कहता हूँ, "नहीं।" यह हिन्दुस्तानका मिशन नहीं है। अगर हिन्दुस्तान, लाज़िमी तौरपर और खास करके अहिंसक तरीक़ोंसे आज़ादी हासिल करनेके बाद दुनियाके दूसरे मुल्कोंको कुचलनेमें अुसका अुपयोग करेगा, तो मैं .खुले तौरपर अिक़रार करता हूँ कि अिससे मुझे बेहद रंज होगा। अलबत्ता अिसमें कोअी शक नहीं कि यूरोपवालोंने अपने स्वार्थके लिअे अिस बड़े काण्टिनेण्ट (महाद्वीप)में रहनेवाली ज़ातोंका शोषण किया है।

अगर हम अिस कान्फरेन्ससे अिस बातका पक्का अिरादा किये बग़ैर चले जायँ कि अेशियाको ज़िन्दा रहना ही है और अुसी आज़ादीसे जीना है, जिससे पच्छिमका हरअेक मुल्क जीता है, तो बड़े दुःखकी बात होगी। मैं सिर्फ़ यही कहना चाहता था कि अिस जैसी कान्फरेन्सें बाक़ायदा होती रहें और अगर आप पूछें कि कहाँ? तो मैं कहूँगा कि अुसके लिअे हिन्दुस्तान ही अेक मौजूँ जगह है।

(अंग्रेज़ीसे)

ज़रूरी काम पहले किये जायँ

गाँवोंके अुद्योग-धन्धोंकी तरक़्क़ीके लिअे श्री मनु सूबेदारकी सदारतमें बनाअी गअी बम्बअी-कमेटीने, तारीफ़के लायक़ फुर्त्तीके साथ, अपनी रिपोर्ट शाया कर दी है। मालूम होता है कि कमेटीकी शुरूआतही ग़लत रुखसे की गअी है। कमेटी बनानेवाली सरकारका ठहराव शुरूमें ही ढुल-मुल है, या यों कहा जाय कि सरकार शुरूसे ही अपने मक़सदको छिपानेमें नाकामयाब हुअी है। वह ठहराव यों है;

"देशमें आर्थिक या माली समतोल क़ायम करने और कच्चे माल, मालको अेक जगहसे दूसरी जगह लाने-ले जानेके साधनों और अिन्सानी ताक़तकी बहुत बड़ी बरबादीको बचानेके लिअे छोटे-छोटे अुद्योग-धन्धोंको फिर सजीव किया जाय और अुन्हें बढ़ाया जाय। खास-खास केन्द्रोंमें कारख़ाने क़ायम करनेसे यह बरबादी .क़ुदरती हो जाती है, क्योंकि वहाँ देहातसे कच्चा माल और मज़दूर लाने होते हैं और तैयार माल बेचनेके लिअे फिर देहातमें भेजना होता है। यह भी चाहने लायक़ बात है कि जहाँ तक हो सके, गाँवोंको अपनी बुनियादी ज़रूरतें .खुद पूरी करने लायक़ बनाया जाय। . . . ."

अिससे यह मालूम होता है कि सरकारका खास मक़सद अेक-केन्द्री पैदावारकी बुनियादी चीज़ोंको देहातमें फैलानेका है। अैसा करनेमें सरकारका मक़सद "बहुत बड़ी बरबादी"को रोकना या दूसरे शब्दोंमें पैदावारका ख़र्च घटाना है। अिसमें गाँवोंकी भलाअीके कामको गौण बना दिया गया है।

सारी रिपोर्ट अिन्हीं विचारोंसे बिगाड़ दी गअी है। न तो अुसमें सच्ची दूरन्देशी दिखाअी देती और न भले-बुरेका ज्ञान। भूखों मरनेवाले देशमें .खुराकी चीज़ोंके धन्धोंके बजाय बटनके धन्धेने सारी अहमियत ले ली है। चावलकी मिलों, वनस्पति घीकी पैदावार, शकरकी मिलों और डिस्टिलरियोंके अहम सवालोंका रिपोर्टमें ज़िक्र तक नहीं किया गया है। हमें ताज्जुब होता है कि बड़े-बड़े पूँजीवादी हितोंवाले बम्बअी सूबेकी अिस रिपोर्टमें अिन सवालोंको छोड़ देनेकी भारी ग़लती अनजानमें ही हो गअी है, या अिन सवालोंसे लोगोंका ध्यान हटाने और दूसरी तरफ़ मोड़नेके लिअे जान-बूझकर अैसा किया गया है?

बेशक, देहातियोंके पतनपर रिपोर्टमें काफ़ी झूठे आँसू बहाये गये हैं और अुनकी तरक़्क़ीके लिअे, कोर्सकी क़िताबकी सच्ची शैलीमें, बड़े अूँचे विचार ज़ाहिर किये गये हैं। लेकिन सारी रिपोर्टसे झूठे-पनका ही सुर निकलता है। अिसकी वजह शायद यह हो कि सरकारने कमेटी क़ायम करते वक़्त अुसे कामके बारेमें जो हिदायतें दी थीं, अुन्हींमें ग़लतियाँ रह गअी हों।

"अपनी ज़रूरतें .खुद पूरी करने"के अुसूलमें कमेटीका बहुत कम विश्वास है। अुसका ज़ाहिर मक़सद है "ज़्यादातर लोगोंकी खरीदनेकी ताक़तको बढ़ाना, ताकि वे अैसी चीज़ें ख़रीद सकें, जो वे आज तक नहीं पा सके थे।" मालूम होता है, कमेटीको अिस बातका होश नहीं है कि देहातकी बहुतसी मुसीबतें पैसेके चलनके बहुत ज़्यादा बढ़ जानेसे ही पैदा हुअी हैं। गाँववालोंको अदला-बदली करनेके लिअे नहीं, बल्कि अपने ही अिस्तेमालके लिअे चीज़ें बनानेका बढ़ावा देना चाहिये। जान पड़ता है कि कमेटी स्विटज़रलैण्ड और जापानकी चमकीली तसवीरोंसे लुभा गअी है। लेकिन अुसने यह नहीं समझा कि अुन छोटे देशोंकी हालतें हमारे देशकी हालतोंसे जुदा हैं और अुनकी परम्परासे चली आ रही ज़िन्दगी भी हमारे देशकी ज़िन्दगीसे बिलकुल भिन्न है।

कमेटीकी तजवीज़शुदा योजनाके मुताबिक़ गाँवोंको धन्धेके हर केन्द्रमें कोअी अेक ही चुनी हुअी चीज़ बड़े पैमानेपर तैयार करनी होगी। "जिस केन्द्रमें ज़रूरत हो, वहाँ अैसी चीज़ बनानेवाले कम-से-कम तीन होशियार कारीगर शहरोंसे बुलाकर बसायें जायँ और अुन्हें आजकी अुनकी पूरी तनख़्वाह और मुफ़्त मकानकी गारण्टी दी जाय।" "पूरे वक़्त काम कर सकनेवाले सारे बालिग़ मर्दों और औरतोंको अिस हलचलमें शरीक होनेकी आज़ादी रहेगी। अुनकी हाज़रीके पहले ही दिनसे अुन्हें ४ आने रोज़से कम मज़दूरी नहीं दी जायगी। जब अुनके होशियार कारीगर बन जानेकी रिपोर्ट मिल जायगी, तो अुनकी मज़दूरीकी दर ४ आनेसे धीरे-धीरे बढ़ाकर ८ आने रोज़ तक कर दी जायगी। रोज़ाना ८ घण्टे काम करनेके लिअे अुन्हें ८ आनेसे ज़्यादा मज़दूरी नहीं दी जायगी।" क्या यह पच्छिमी देशोंके 'पूअर हाअुस' यानी ग़रीबोंको पालने-पोसनेवाली संस्थाका सुधरा हुआ रूप है?

समयके साथ चलनेका ध्यान रखते हुअे और शायद बुनियादी-तालीमकी दुहाअी मचानेवालोंकी बातको मानते हुअे कमेटीने "अिस सवालकी जाँचकी सिफ़ारिश की है कि क्या बच्चे अेक आना रोज़-पर आधे दिन काम करके अपने-आपको फ़ायदा नहीं पहुँचा सकते?" यह मज़दूरी ज़्यादा-से-ज़्यादा ४ आने रोज़ तक बढ़ाअी जा सकती है। अुसका ख़याल है कि अैसे अुद्योग-धन्धोंके केन्द्रोंमें बच्चोंको आँख, छुआव या स्पर्श, नाप, वज़न और दूसरी बातोंकी ट्रेनिंग मिल सकती है।"

कमेटीने बड़े अुत्साहके साथ गाँवमें कोटके बटन बनानेवाले अेक केन्द्रके ख़र्चका हिसाब लगाया है। अैसा केन्द्र ४ रुपये रोज़पर तीन होशियार कारीगरोंको, २ आने रोज़पर ४० बच्चोंको, ६ आने रोज़पर ४० औरतों और ६ आने रोज़पर ४० मर्दोंको काम देगा। हर हालतमें, हमें कमेटीको औरतों और मर्दोंमें बराबरी क़ायम करनेके लिअे मुबारकबाद देना चाहिये, फिर वह बराबरी काग़ज़पर ही क्यों न हो! वह "नौसिखुओंके अिस भ्रमको भी मिटा रही है कि हरअेक शख़्सको अपनी पसन्दका काम मिल सकता है और अुसे अपनी पसन्दका काम ही करना चाहिये।" वह सत्ताधारी बनकर यह अैलान करती है कि "अिन्सान .क़ुदरतन् अैसा बना है कि वह रोज़-रोज़ अेक ही तरहकी ज़िन्दगी बितानेका आदी हो जाता है। और जहाँ तक कामका ताल्लुक़ है, ज़्यादातर लोग वही काम करते हैं जो तक़दीर या मौक़ेसे अुन्हें मिल जाता है।" अिस मामलेमें भगवान्ने कोटके बटन बनानेका मौक़ा दिया है! ज़िन्दगीकी अिस अूँची फिलॉसफ़ीसे वह मज़बूर होकर, अेकदम दुनियावी फ़ायदोंका विचार करने लगती है और कहती है: "बार-बार अेक ही चीज़ बनानेसे अिन्सान कम-से-कम समयमें होशियार कारीगर बन सकता है और कम-से-कम ग़लतियों और बरबादीकी गुंजाअिश रहती है। कामकी अिस तरह हद बाँधनेसे ही देहाती हालतोंमें सादी चीज़ें बड़े पैमाने-पर बनाअी जा सकती हैं। अिस तरह जो चीज़ें तैयार की जायँगी,

www.vinoba.in

अुनका खर्च शायद कारखानेमें तैयार की गअी अुसी तरहकी चीज़ोंसे कम होगा।" मेहनतके लुभावने अुसूल कितने अुम्दा लफ़्ज़ोंमें समझाये गये हैं!

अक्सर यह कहा जाता है कि बड़े पैमानेपर तैयार किये जानेवाले मालकी सादी क्रिया आदमीको थका देती है। लेकिन बम्बअी-कमेटी ज़ोरदार शब्दोंमें अिसका विरोध करती है। हम प्रेसिडेण्ट और कमेटीके दूसरे मेम्बरोंसे जूतोंके कारखानेके भीतर जानेकी विनती करेंगे, जहाँ घूमता हुआ पट्टा जूतोंके सैकड़ों फर्मोंको अपने साथ घुमाता है। जगह-जगह खड़े मज़दूर अिन फर्मोंपर जूते बनानेके मुख़्तलिफ़ काम करते हैं। सबसे पहले हम प्रेसिडेण्टको ही खड़ा करेंगे। चूँकि खुला फर्मा अुनके सामनेसे गुज़रेगा, अुनके बाज़ूमें चिपचिपी लेअीका अेक बरतन होगा और अुनके हाथमें अेक बुरुश दिया जायगा। वे बुरुशको लेअीमें डुबोकर पाससे गुज़रनेवाले फर्मेपर चुपड़ेंगे। सुबहके आठसे लेकर शामके ५ बजे तक—बीचमें नाश्ता-पानीके लिअे अेक घण्टेकी छुट्टी मिलेगी—अुनके सामनेसे गुज़रनेवाले सैकड़ों फर्मोंपर अुन्हें लेअी चुपड़नेका ही काम करते रहना होगा! सालके ३०० दिनोंमें रोज़ अुन्हें यही काम करना होगा और अुन्हें भगवान्‌के जिसने हमारे प्रेसिडेण्टको जूतोंके फर्मोंपर लेअी चुपड़नेका मौक़ा दिया, अिस मक़सदमें सहयोग करनेके लिअे ८ आने रोज़ मज़दूरी दी जायगी! अिसके बाद शायद हमारे लिअे यह ज़रूरी नहीं होगा कि हम कमेटीके दूसरे मेम्बरोंको भी सादी क्रियायें करते देखें, जो अुनकी रायमें थकानेवाली नहीं होतीं। कमेटी साफ़ लफ़्ज़ोंमें कहती है कि "अिस रिपोर्टमें जो योजना सुझाअी गअी है, अुसमें कल्पनाके अुस स्वर्गकी कतअी जगह नहीं है, जहाँ अिन्सान अपनी पसन्दका काम मनमाने ढंगपर कर सकता है।" अगर प्रेसिडेण्ट अपने पाससे गुज़रनेवाले फर्मेपर लेअी चुपड़नेकी मेहरबानी न करेंगे, तो अुनके बादका आदमी जो कड़ा फर्मेपर रक्खेगा, वह अुसपर नहीं चिपकेगा और भगवान्‌का सारा मक़सद ही खत्म हो जायगा। अिसलिअे प्रेसिडेण्टको अपनी मनचाही बात कभी न करने दी जायगी।

तैयार की जानेवाली चीज़ोंके चुनावके बारेमें कमेटी यह क़बूल करती है कि "अुसने गाँववालोंकी ज़रूरतें पूरी करनेवाले गाँवके अुद्योग-धन्धों और शहरवालोंके अिस्तेमालकी चीज़ें तैयार करनेवाले अुद्योग-धन्धोंके बीच अक्सर की जानेवाली तुलनापर ध्यान देनेकी तकलीफ़ ही नहीं अुठाअी।"

कमेटीका यह दावा है कि अुसकी योजना हिन्दुस्तानकी मौजूदा हालतोंमें काम करनेवाले क़ाबिल हिन्दुस्तानियोंकी बनाअी हुअी है। अुनकी योग्यताके बारेमें यक़ीनन् शककी कोअी गुंजाअिश नहीं है, लेकिन हिन्दुस्तानकी हालतोंको समझनेमें फ़र्क़ हो सकता है। कमेटीके मनमें यह डर समा गया है कि जब तक अुसकी योजनापर अमल नहीं किया जायगा, तब तक गाँव देशकी बढ़ी हुअी आबादीकी ज़रूरतें पूरी नहीं कर सकेंगे।

अपनी बातोंको साबित करनेके लिअे कमेटीने बड़ी अच्छी-अच्छी दलीलें दी हैं, जो पढ़नेमें बड़ी दिलचस्प और लुभावनी मालूम होती हैं। लेकिन जगहकी कमी होनेसे हम पाठकोंके फ़ायदेके लिअे अुन्हें यहाँ नहीं दे सकते। कमेटी अपनी रिपोर्टमें कोअी झूठा संकोच ज़ाहिर नहीं करती, क्योंकि वह अीमानदारीसे यह मानती है कि अुसने अपनी योजनामें जो बुनियादी विचार रक्खे हैं, अुनसे सिर्फ़ बम्बअीको ही नहीं, बल्कि दूसरे सूबोंको भी फ़ायदा पहुँचेगा। क्या यह चेतावनी है?

बड़े पैमानेपर माल तैयार करनेवाले गाँवके अुद्योग-धन्धे मेड़ोंकी खालमें खूँखार मेड़िये ही जान पड़ते हैं। हमें विश्वास है कि बम्बअीकी सरकार और जनता सावधानीसे अिस रिपोर्टकी जाँच करेगी और होशियारीसे शकर चढ़ाअी हुअी अिस कड़ुअी गोलीको निगल नहीं जायगी।

(अंग्रेज़ीसे) जे० सी० कुमारप्पा

नोआखालीके बारेमें

नोआखालीकी हालतके बारेमें गांधीजीको नीचेके तार मिले, जिनके अुन्होंने नीचे लिखे जवाब दिये—

२ अप्रैलको रामगंजसे दिये गये अपने तारमें श्री सतीशचन्द्र दास-गुप्तने लिखा था—

"यह तुरत डाकसे मिली खबर है। मैंने ज़िला मजिस्ट्रेट, पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट और बड़े वज़ीरको नीचे लिखा तार दिया है—'मार्च २३से कल तक पाँच जगह आग लगाअी गअी है। कल रामगंज थानाके मोहम्मदपुर नामके गाँवमें आग लगाअी गअी। वहाँ, हिफ़ाज़तके खयालसे अेक ही कमरेमें सोये हुअे २१ मर्द, औरत और बच्चोंके तीन कुनबोंको ज़िन्दा जलानेकी कोशिश की गअी थी। यह कमरा बाहरसे बन्द कर दिया गया था। मकानकी अिस छप्परवाली झोंपड़ी और दूसरी झोंपड़ियोंको अेक साथ आग लगा दी गअी। कमरेके भीतरके लोगोंने चटाअीकी दीवालको तोड़कर अपनी जान बचाअी।'"

५ अप्रैलको रामगंजसे भेजे गये दूसरे तारमें श्री दासगुप्तने लिखा था—

"मैंने बड़े वज़ीर और मुक़ामी अफ़सरोंको नीचे लिखा तार भेजा है—रामगंज थानाके नज़दीक चांगिरगाँवमें कल रात (४ अप्रैलको) हुअी आगकी अेक और घटनाकी तरफ़ आपका ध्यान खींचता हूँ। वहाँ भी पिछली घटनाकी तरह हरलाल भौमिकने अपने-आपको सोनेके कमरेमें बाहरसे बन्द पाया, जब कि सारे मकानके साथ सोनेका कमरा भी जल रहा था। भगवान्‌की मेहरबानीसे हरलाल सिकुड़ी हुअी झोंपड़ीकी नरकटसे बनी मज़बूत दीवालका अेक कोना काटकर बच निकला। प्रार्थना है कि आप हिन्दुओंको ज़िन्दा जलानेकी अिन भयानक कोशिशोंपर विचार करें और कुछ न करनेकी वृत्ति या ज़हनियतको छोड़कर निश्चित सरकारी नीति बनायें।'"

अूपरके तारोंका गांधीजीने यह जवाब दिया—"आपके छोटे मगर दर्दनाक तार मिले। हरनबाबूका तार भी मिला। अैसी हालतमें या तो गाँव छोड़ दिया जाय या मज़हबी पागलपनकी आगमें जलकर जान दे दी जाय। आशा है, दोनोंमेंसे किसी अेकको चुननेकी राय देनेके लिअे आप मुझे वहाँ आनेकी सलाह नहीं देंगे। कार्यकर्त्ताओंके साथ सलाह करके तुरत क़दम अुठाअिये।"

चौमुहानी (नोआखाली)से ६ अप्रैलको भेजे गये अपने तारमें श्री हरनवन्द्र घोष चौधरी, अेम० अेल० अे० (बंगाल)ने लिखा था—"नोआखालीमें हिन्दुओंको फिरसे बसानेका काम दिन-दिन मुश्किल होता जा रहा है। अराजकता, चोरी, सेंध लगाना, रातके हमले, घरों और घासके ढेरोंको जलाना, वग़ैरा घटनाअें आम हो चली हैं। कुछ हिस्सोंमें खेत जोतनेके काममें रुकावट डाली जाती है। लूट, आग और खूनके लगभग ५०० मामलोंकी आखिरी रिपोर्ट यह बहाना करके सरकारके सामने पेश कर दी गअी कि अुनका काफ़ी सबूत नहीं मिलता। मौजूदा हालतमें यह सबूत सिर्फ़ अुन्हीं लोगोंसे मिल सकता है, जो अिन जुल्मोंके शिकार हुअे थे। सज़ाके डरसे छुप-छिपकर रहनेवाले और क़सूरवार लोग आज़ादीसे घूमते हैं। अब तो यह कहा जाता है कि वे अेक जगह अिकट्ठा होकर मीटिंग भी करते हैं। लोगोंको पहले मामलोंमें बेअीमानीकी बू आने लगी है, क्योंकि जिन थानोंमें दंगा हुआ था, वहाँके सब हिन्दू अफ़सर बदल दिये गये हैं। वे अफ़सर भी बदल दिये गये, जिन्होंने बहुतसे गुनहगारोंके खिलाफ़ अिलज़ामोंकी फ़ेहरिस्त वक़्तपर पेश कर दी है। जिन अफ़सरोंने दंगेको दबानेकी कोशिश की या बड़ी तादादमें क़सूरवारोंको गिरफ़्तार कर लिया था, अुनके खिलाफ़ कार्रवाअी की जा रही है। और, अब गिरफ़्तार किये गये लोगोंमेंसे ९० फ़ी सदी ज़मानतपर छोड़ दिये गये हैं। कार्यकर्त्ताओं, हिन्दू पुलिस और फ़ौजी लोगोंपर १००से ज़्यादा अुलट मुक़दमे (काअुण्टर केसेस) चलाकर सरगर्मीसे अुनकी जाँच की जा रही है।

www.vinoba.in

कुछ मामलोंमें लोगोंको तलब किया जाता है या दूसरी तरहसे सताया जाता है।"

अिसके जवाबमें गांधीजीने यह तार दिया—"अगर आपकी कही बातें सच हों, तो यह साफ़ ज़ाहिर होता है कि या तो हिन्दू लोग नोआखाली छोड़कर चले जायँ, या मुसलमानोंके मज़हबी पागलपनकी आगमें जलकर मर जायँ। सतीशबाबूसे सलाह लीजिये और मिलकर काम कीजिये।"

गांधीजीने बंगालके बड़े वज़ीर सुहरावर्दी साहबको नीचे लिखा तार भेजा है—"मुझे नोआखालीमें दिन-दिन बढ़ती जा रही अराजकताके बारेमें लगातार दर्दनाक तार मिल रहे हैं। मेरी रायमें आपको सतीशचन्द्र दासगुप्तके तारोंपर तुरत ध्यान देना चाहिये और ज़रूरी कार्रवाअी करनी चाहिये। मैं तारोंको अखबारोंमें शाया कर रहा हूँ।"
(अंग्रेज़ीसे)

हरिजनसेवक
२० अप्रैल १९४७

अेशियाका पैग़ाम

२३ मार्च, १९४७को दिल्लीके पुराने क़िलेमें होनेवाली अेशियाअी कान्फरेन्सके आखिरी जलसेमें तक़रीर करते हुअे गांधीजीने कहा—

मैं सोचता हूँ कि परदेसी ज़बानमें बोलनेकी वजहसे मुझे आपसे माफ़ी माँगनेकी ज़रूरत नहीं है। मुझे शक है कि यह लाअुड-स्पीकर मेरी आवाज़को अिस बड़ी सभाके आखिरी छोरतक पहुँचा सकेगा या नहीं। अगर मंचसे बहुत दूरीपर बैठे हुअे कुछ लोग मेरी बात न सुन सकें, तो अुसमें कसूर लाअुड-स्पीकरका होगा, मेरा नहीं।

मैं आपसे कहने जा रहा था कि मैं माफ़ी नहीं माँगना चाहता। मेरा साइस नहीं होता। आप मेरे सूनेकी भाषा नहीं समझ सकते, जो मेरी मादरी-ज़बान है। मैं अपनी निजी ज़बान गुजरातीमें तक़रीर करके आपका अपमान नहीं करना चाहता। हमारी क़ौमी ज़बान हिन्दुस्तानी है। मैं जानता हूँ कि अुसके अन्तर्राष्ट्रीय ज़बान बननेमें अभी लम्बा वक़्त लगेगा। अन्तर्राष्ट्रीय व्योहारमें अंग्रेज़ीका बेशक अव्वल दरजा है। मैं सुना करता था कि फ्रेन्च सियासी ज़बान है। मैं छोटा था, तब मुझसे कहा गया था कि अगर मैं यूरोपके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक सफर करना चाहता हूँ, तो मुझे फ्रेन्च सीखनेकी कोशिश ज़रूर करनी चाहिये। अिसलिअे, दूसरोंको अपनी बात समझा सकनेकी ग़रज़से मैंने फ्रेन्च सीखनेकी कोशिश की। अंग्रेज़ी और फ्रेन्च दो हरीफ़ (प्रतिस्पर्धी) ज़बानें हैं। मुझे चूँकि अंग्रेज़ी सिखाअी गअी है, अिसलिअे अुस ज़बानमें ही बोलना मेरे लिअे स्वाभाविक है।

मुझे हैरानी थी कि मैं आप लोगोंके सामने क्या बोलूँगा। मैं अपने खयालोंको बटोरना चाहता था, मगर मैं मंजूर करता हूँ कि मुझे वक़्त नहीं मिला। फिर भी कल मैंने वचन दिया था कि मैं कुछ शब्द कहनेकी कोशिश करूँगा। बादशाह खानके साथ आते हुअे मैंने कागज़का अेक छोटा टुकड़ा और पेन्सिल माँगी। पेन्सिलके बदले मुझे फाअुन्टेन-पेन मिली। मैंने कुछ शब्द लिखनेकी कोशिश की। आपको मुझसे यह सुनकर अफ़सोस होगा कि वह कागज़का टुकड़ा खो गया, अगरचे जो कुछ मैं कहना चाहता था, वह मुझे याद है।

दोस्तो, आपने असली हिन्दुस्तान नहीं देखा है और न यह कान्फरेन्स असली हिन्दुस्तानके बीच हो रही है। दिल्ली, बम्बअी, मद्रास, कलकत्ता, लाहोर . . . ये सब बड़े शहर हैं, अिसलिअे अिनपर पच्छिमका असर है।

अिसपर से मुझे अेक कहानी याद आअी। वह फ्रेन्च ज़बानमें लिखी गअी थी और अेक अेंग्लो-फ्रेन्च फ़िलॉसफ़र (दार्शनिक) ने मेरे लिअे अुसका अंग्रेज़ीमें तरजुमा किया था। वह अेक बेग़रज़ या निःस्वार्थ आदमी था। अुसने जाने-पहचाने बग़ैर मुझे अपना दोस्त बना लिया था, क्योंकि वह हमेशा कम तादादवालोंकी तरफ़दारी करता था। अुस वक़्त मैं अपने वतनमें नहीं था। दक्खिन अफ्रीकाके यूरोपियन मुझे यह कहनेके लिअे माफ़ करेंगे कि हम लोग सिर्फ़ तादादमें ही कम नहीं थे, बल्कि निचले दरजेके भी माने जाते थे और हमसे नफ़रत की जाती थी। मैं अेक कुली वकील था। अुस वक़्त तक दक्खिन अफ्रीकामें कोअी कुली डॉक्टर या कुली वकील नहीं होता था। वहाँ अिस क़िस्मका मैं पहला ही शख़्स था। शायद आप जानते होंगे कि 'कुली' शब्दका क्या मतलब होता है।

अिस दार्शनिक दोस्तकी मा फ्रान्सकी थी और बाप अंग्रेज़ था। अुसने कहा—"मैं तुम्हारे लिअे अेक फ्रेंच कहानीका तरजुमा करना चाहता हूँ। अेक बार तीन साअिन्सदाँ सत्यकी तलाशमें फ्रांससे निकले। वे अेशियाके अलग-अलग हिस्सोंमें गये। अुनमेंसे अेक हिन्दुस्तान पहुँचा। अुसने सत्यकी तलाश शुरू की। वह अुस वक़्तके शहरोंमें गया। तब तक अंग्रेज़ लोग हिन्दुस्तानमें नहीं आये थे। मुगल-कालसे भी पहलेकी यह बात है। अुस साअिन्सदाँने अूँची ज़ातके लोगोंको अच्छी तरह देखा-भाला और जाँचा, मगर अुसे नाअुम्मेदी हुअी। अखीरमें वह अेक मामूली गाँवकी अेक मामूली झोंपड़ीमें गया। वह अेक भंगीकी झोंपड़ी थी, और वहाँ अुसे वह सत्य मिला जिसकी अुसको तलाश थी।"

अगर आप सचमुच हिन्दुस्तानका असली रूप देखना चाहते हैं, तो आपको अैसे गाँवोंके ग़रीब भंगी-घरोंमें अुसे ढूँढ़ना होगा। हिन्दुस्तानमें अैसे ७ लाख गाँव हैं और ३८ करोड़ जनता अुनमें बसती है।

अगर आपमेंसे कुछ लोग गाँवोंको देखेंगे, तो वे आपको अपनी तरफ खींच न सकेंगे। अुनपर जमे हुअे गोबर और कूड़े-करकटकी तहें हटाकर आपको अुन्हें देखना होगा। मैं यह नहीं कहता कि किसी ज़मानेमें वे बहिश्त जैसे थे। मगर आज तो वे सचमुच कूड़े-करकटके ढेर बने हुअे हैं। पहले वे अैसे नहीं थे। जो कुछ मैं कह रहा हूँ, वह तवारीखसे पढ़कर नहीं, बल्कि आँखों-देखी कहता हूँ। मैं हिन्दुस्तानके अेक सिरेसे दूसरे सिरेतक घूमा हूँ और मैंने अिन्सानियतके अुन बदनसीब नमूनोंको देखा हैं जिनकी आँखोंका तेज़ मर चुका है। अुनसी हिन्दुस्तान वे हैं। अिन मामूली झोंपड़ोंमें, गोबरकी अिन ढेरियोंके बीच ग़रीब भंगी रहते हैं, जिनमें आपको अक़लमन्दीका निचोड़ मिलेगा।

अिसके अलावा मैंने किताबोंसे जानकारी हासिल की है—अुन किताबोंसे, जो अंग्रेज़ अितिहासकारों द्वारा लिखी गअी हैं। हम अंग्रेज़ अितिहासकारों द्वारा अंग्रेज़ीमें लिखी गअी किताबें पढ़ते हैं; मगर अपनी मादरी ज़बान या क़ौमी ज़बान हिन्दुस्तानीमें नहीं लिखते। हम अपने अितिहासको अुसके मूल रूपमें पढ़नेके बजाय, अंग्रेज़ीके ज़रिये पढ़ते हैं। यह अंग्रेज़ोंकी हिन्दुस्तानपर की हुअी सांस्कृतिक विजय या तमद्दुनी जीत है।

गांधीजीने आगे कहा—"पच्छिमको ज्ञानकी रोशनी पूरबसे ही मिली है। अिन विद्वानों या आलिमोंमें सबसे पहले ज़रदुश्त हुअे थे। वे पूरबके थे। अुनके बाद बुद्ध हुअे, जो पूरबके—हिन्दुस्तानके—थे। बुद्धके बाद कौन हुआ? अीशु ख्रिस्त, वे भी पूरबके थे। अीशुसे पहले मोज़ेज़ हुअे, जो फिलस्तीनके थे, अगरचे अुनका जनम मिस्रमें हुआ था। अीशुके बाद मोहम्मद हुअे। यहाँ मैं राम, कृष्ण और दूसरे महापुरुषोंका नाम नहीं लेता। मैं अुन्हें कम महान् नहीं मानता, मगर अदबी दुनिया अुनसे कम वाक़िफ़ है। जो हो, मैं दुनियाके अैसे किसी अेक भी शख़्सको नहीं जानता, जो अेशियाके अिन महापुरुषोंकी बराबरी कर सके। और तब क्या हुआ? अीसाअियत जब पच्छिममें पहुँची, तो अुसकी शकल बिगड़ गअी। मुझे अफ़सोस है कि मुझे अैसा कहना पड़ता है। अिस विषयमें मैं और आगे नहीं बोलूँगा।

वह कहानी मैंने आपको यह समझानेके लिअे कही है कि बड़े शहरोंमें आप जो कुछ देखते हैं, वह असली हिन्दुस्तान नहीं है।

www.vinoba.in

सचमुच जो खूँरेज़ी और जो विध्वंस हमारी आँखोंके सामने हो रहा है, वह अेक डरावनी चीज़ है। जैसा कि मैंने आपसे कल कहा था, अिस विध्वंसकी याद आप हिन्दुस्तानकी सरहदके बाहर न ले जायँ, अुसे यहीं छोड़ जायँ।

जो बात मैं आपको समझाना चाहता हूँ, वह अेशियाका पैग़ाम है। अुसे पच्छिमी बमोंसे या अेटम-बमकी नकल करनेसे नहीं सीखा जा सकता। अगर आप पच्छिमको कोअी पैग़ाम देना चाहते हैं, तो वह प्रेम और सत्यका पैग़ाम होना चाहिये। मैं सिर्फ़ आपके दिमाग़ोंको ही अपील नहीं करना चाहता। मैं तो आपके दिलोंपर क़ब्ज़ा करना चाहता हूँ।

जमहूरियतके अिस ज़मानेमें, ग़रीबसे ग़रीबकी जागृतिके अिस युगमें आप ज़्यादासे ज़्यादा ज़ोर देकर अिस पैग़ामका दुनियामें प्रचार कर सकते हैं। चूँकि आपका शोषण किया गया है, अिसलिअे अुसका अुसी तरह बदला चुकाकर नहीं, बल्कि सच्ची समझदारीके ज़रिये आप पच्छिमपर पूरी तरह फतह पा सकते हैं। अगर हम सिर्फ़ अपने दिमाग़ोंसे ही नहीं, बल्कि दिलोंसे भी अिस पैग़ामके मर्मको, जिसे अेशियाके ये विद्वान् हमारे लिअे छोड़ गये हैं, अेक साथ समझनेकी कोशिश करें, और अगर हम सचमुच अुस महान् पैग़ामके लायक़ बन जायँ तो मुझे यक़ीन है कि हम पच्छिमको पूरी तरहसे जीत लेंगे। हमारी अिस फ़तहको पच्छिम ख़ुद भी प्यार करेगा।

पच्छिम आज सच्चे ज्ञानके लिअे तरस रहा है। अणु (अेटम) बमोंकी दिन दूनी बढ़तीसे वह नाअुम्मीद हो रहा है, क्योंकि अणु-बमोंके बढ़नेसे सिर्फ़ पच्छिमका ही नहीं, बल्कि पूरी दुनियाका नाश हो जायगा, मानो बाअिबलकी भविष्यवाणी सच होने जा रही है और पूरी क़यामत होनेवाली है। अब यह आपके अूपर है कि आप दुनियाकी नीचता और पापोंकी तरफ़ अुसका ध्यान खींचें और अुसे बचावें — यही वह विरासत है, जो मेरे और आपके पैग़म्बरोंसे अेशियाको मिली है।

(अंग्रेज़ीसे)

अुद्योग-धन्धोंकी हिफ़ाज़त

हम दूसरोंकी आँखका तिनका भी आसानीसे देख लेते हैं, मगर अपनी आँखका शहतीर भी हमें नहीं दिखाअी देता। कहा जाता है, अमेरिकावालोंने अंग्रेज़ोंको यह सलाह दी है कि वे सामराजके देशोंके साथ अपने व्योपारी सम्बन्धोंमें ब्रिटेनको तरजीह देनेकी नीति छोड़ दें। अेमरीने अेक ट्रेड-अेसोसिअेशनमें, जिसका वह सदर है, बोलते हुअे अैसी किसी बातके होनेका विरोध किया और बेशरमीसे यह भी कहा कि ब्रिटेनके कारखानेदारोंके लिअे खुले बाज़ारमें मुक़ाबला करना नामुमकिन होगा। क्या यह अुनकी नाक़ाबलीयतका अिक़रार नहीं है? अगर अिसका सही नतीजा निकाला जाय, तो यह जानते हुअे कि सामराजी तरजीहके मामलेमें आखिरी फैसला करनेकी सत्ता ब्रिटेनके पास है, क्या अिसका मतलब यह नहीं होता कि ब्रिटेन अपने "सामराजके सारे मुल्कों"की तिजारतपर बोझ डालकर अुनके व्योपारको कुचलना चाहता है? क्या अैसा करना हिन्दुस्तानके साथ ग़ैरअिन्साफ़ न होगा?

संयुक्त राष्ट्र-संघकी अिक़तिसादी और समाजी कौंसिल, यानी संयुक्त राष्ट्र-संघकी कान्फरेन्सकी व्योपार और मज़दूरोंसे सम्बन्ध रखनेवाली कमेटीकी पहली मीटिंग लन्दनमें हुअी थी। अुसमें शामिल हुअे सारे मेम्बरोंने "रोक लगानेवाले तिज़ारती क़ायदों"का ज़िक्र करते हुअे अेक-रायसे यह ज़ाहिर किया कि अैसे क़ायदे "सारे देशोंकी पैदावार, व्योपार और आमदका अूँचा दरजा क़ायम रखनेकी कोशिशपर बुरा असर डालते हैं।" अैसा होनेसे हिन्दुस्तानमें, जो कि "आमदके नाते नीचे दरजेका" देश है, हमारे लिअे यही ज़्यादा फ़ायदेकी बात होगी कि हम अपने अुद्योग-धन्धोंकी हिफ़ाज़त या संरक्षण करें। अूपरकी अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाने व्योपारमें रुकावट डालनेवाली सारी प्रथाओंको हर तरह बन्द करनेकी सिफ़ारिश की है — बेशक यह सिफ़ारिश अुसने अपने स्वार्थके खातिर ही की है — फिर भी हमें तो अिस मामलेमें ज़्यादा-से-ज़्यादा आगे बढ़नेकी ही कोशिश करनी चाहिये।

जिन संयुक्त राष्ट्रोंकी कौंसिलोंमें स्वार्थकी यह भावना या ज़हनियत फैली हुअी है, अुनसे दबे हुअे देश अिन्साफ़की आशा कैसे रख सकते हैं?

(अंग्रेज़ीसे) जे० सी० कुमारप्पा

गांधीजीकी दिल्लीकी डायरी

१-४-'४७

दिल्लीमें मंगलवारकी शामको जब प्रार्थना हो रही थी, तो अेक भड़के हुअे हिन्दू नौजवानने क़ुरानकी आयतें पढ़नेपर अेतराज़ किया। अिससे गांधीजीकी प्रार्थना-सभामें थोड़ा विघ्न हुआ। जबतक वह लड़का प्रार्थना-सभासे हटाया गया, तबतकके लिअे गांधीजीने प्रार्थना बन्द रखी।

गांधीजीने कहा कि अगरचे अुस नौजवानके हटाये जानेके बाद पूरी प्रार्थनामें — जिसमें ज़रदुश्तकी कवितायें, और रामधुन भी शामिल है, फेरबदल करनेकी कोअी ज़रूरत तो नहीं है; मगर मैं बाक़ीकी प्रार्थना छोड़ देना चाहता हू और अुस नौजवानको समझाना चाहता हूँ कि जिसे वह अपनी जीत समझता है, अुससे सचमुच पूरी सभाको नुक़सान पहुँचा है, जो संपूर्ण प्रार्थना सुनना चाहती थी। अुसका अैसा करना अेक हिन्दूको ज़ेब नहीं देता। साथ ही अुसने अपने कामसे सभाके मामूली क़ानूनोंको बदतमीज़ीसे तोड़ा है। अैसे नासमझीके कामसे ही, जैसा कि अिस नौजवानने किया है, आपसमें खिंचाव पैदा होता है और नतीजेमें वे हैवानियतभरी वारदातें होती हैं, जिन्हें हम बढ़ते हुअे पैमानेपर नोआखाली, बिहार और पंजाबमें देख चुके हैं। अिसलिअे यही वक़्त है, जब लोगोंको सारा जंगलीपन छोड़नेका पक्का अिरादा कर लेना चाहिये।

गांधीजी आगे कहते रहे कि जब नोआखालीमें मुझे बतलाया गया कि बिहारमें मुसलमानोंके साथ कैसी बेरहमी की गअी है, तो शरमसे मुझे अपना सिर झुका लेना पड़ा। और अब मानो बिहारके जवाबमें पंजाबकी अफ़सोसनाक वारदातें हो रही हैं। गांधीजीने कहा कि सच पूछा जाय, तो अिन्सानके लिअे मौत, अेक साथी और दोस्तकी तरह है, अिन सारे झगड़ोंमें जो लोग बहादुरीसे मरे हैं, अुन्होंने तो अपना जीवन सार्थक कर लिया। दूसरे कुछ लोग बुज़दिलीसे भी मरे होंगे, मगर अब अिस बातमें कोअी अहमियत नहीं रही। क्योंकि वे सब भी आख़िरकार मरे और अुन्होंने शान्ति पाअी। मगर अब अुनके बाद ज़िन्दा रहनेवाले हम गुनाहगार लोग भगवान्के प्रति जवाबदार हैं। किसके दिलमें क्या है, अिसे अेक वही जानता है।

गांधीजीने लोगोंको समझाया कि वे हिंसा और जंगलीपन छोड़ें। अुन्होंने कहा कि मैं बिहारमें रहकर मुसलमानोंके दिलोंमें विश्वास और हिन्दुओंके दिलोंमें प्रेम फिरसे पैदा करनेकी कोशिश कर रहा हूँ। मुझे लगता है कि मैं कामयाब हो रहा हूँ और अगर मुझे वहाँ कामयाबी हुअी, तो और जगहोंपर भी हालत अच्छी हो जायगी।

बड़े दुखकी बात है कि जिस हिन्दुस्तानमें सत्य और अहिंसाके हथियार लेकर आज़ादीकी लड़ाअी लड़ी गअी, वहींपर लोग आज जंगलियों जैसे काम कर रहे हैं। कांग्रेस जिस चीज़की ताअीद करती रही है, अुसीको ये लोग झूठ साबित कर रहे हैं।

गांधीजी आगे कहते रहे कि तवारीखमें किसी हुकूमत ने अपने आधीन किसी देशको अुसकी मर्ज़ीपर कभी नहीं छोड़ा; मगर हिन्दुस्तानको आज़ादी देना तय करके अंग्रेज़ लोग आज यही करनेकी कोशिश कर रहे हैं। यहाँपर अुनके पिछले कारनामे चाहे जैसे रहे हों, मगर आज यह मानना ठीक है कि वे अिस मामलेमें अीमानदार हैं। मगर क्या हिन्दुस्तानी आपसमें लड़कर अपने आपको गिराना चाहते हैं? अिसका नतीजा यह भी हो सकता है कि आपलोग शान्ति बनाये रखनेके लिअे अंग्रेज़ फ़ौजोंसे कहें कि वे हिन्दुस्तानमें ही बनी रहें। मुझे अुम्मीद है कि आप अैसा पागलपन नहीं करेंगे।

अिसके बाद गांधीजी ने दिल्लीमें चलती हुअी अेशियाअी कान्फरेन्सका ज़िक्र करते हुअे कहा कि वह अेक बड़ी और अहम चीज़

www.vinoba.in

है और आपका रत्न जवाहरलाल अेशियाके नुमाअिन्दोंके प्रति रहनेवाले अपने प्यारके कारण और संयुक्त अेशियाके अपने सपनेके कारण सारे नुमाअिन्दोंका बहुत प्यारा है। हिन्दुस्तान सिर्फ़ अपनी परम्पराओंके प्रति सच्चा रहकर ही दुनियाको अेक करनेका सन्देश दे सकता है, जो कि अुसका फ़र्ज़ है। देशमें आपसी लड़ाअियाँ जारी रखकर अगर आप जवाहरलालके संयुक्त अेशियाके सपनेको बिगाड़ेंगे, तो अुन्हें बड़ा धक्का पहुँचेगा।

गांधीजीने यह कहते हुअे अपनी तक़रीर खत्मकी कि जब तक आप अपने दिल भगवान्में नहीं लगायेंगे, तब तक झगड़ेका कहीं अन्त न होगा। आज मैं महसूस करता हूँ कि मेरा कोअी अनुयायी नहीं है। अगर मेरे अनुयायी होते, तो ये अफ़सोसनाक वारदातें न गुज़रतीं। मगर चाहे सब मुझे छोड़ दें, मैं जानता हूँ कि भगवान् मुझको नहीं छोड़ेगा और वह मुझे अपना फ़र्ज़ अदा करनेमें सदा रास्ता दिखायेगा। अिन्सान सिर्फ़ तभी अपना गुस्सा छोड़ सकेगा, जब भगवान् अुसके दिलमें बसकर अुसपर राज करेगा।

२-४-'४७

दो या तीन आदमियोंके क़ुरानकी आयतें पढ़नेपर अेतराज़ करनेकी वजहसे आज शामको भी गांधीजीने प्रार्थना नहीं की।

प्रार्थना शुरू करनेके ठीक पहले गांधीजीने लोगोंसे पूछा कि दो दिन पहले जिस तरह अेक आदमीने क़ुरानकी आयतें पढ़नेपर अेतराज़ किया था, क्या अुसी तरह आपमेंसे किसीका अैसा करनेका अिरादा है? सभामें आये हुअे लोगोंमेंसे दो या तीनने अिसपर अेतराज़ किया और गांधीजीसे पूछा कि आप किस अधिकारसे अेक हिन्दू मन्दिरमें क़ुरान पढ़ सकते हैं?

गांधीजीने जवाब दिया कि यह मन्दिर भंगियोंका है, जो मेरे प्रार्थना करनेके तरीक़ेपर आपत्ति नहीं करते; और अेक भंगी होनेके नाते मुझे अिस मंदिरमें मनमाने तरीक़ेसे प्रार्थना करनेका हक़ हासिल है। जो लोग क़ुरानकी आयतें पढ़नेपर आपत्ति करते हैं, वे न तो भंगी हैं और न वे भंगी बनना चाहेंगे।

अगरचे बहुतसे लोगोंने गांधीजीको यक़ीन दिलाया कि वे पूरी प्रार्थना सुनना चाहते हैं, गांधीजीने प्रार्थना करनेसे अिन्कार कर दिया और कहा कि मैं फिरसे अिन कुछ अेतराज़ करनेवालोंकी जीत मान लेता हूँ। मगर यह सचमुच हिन्दू मज़हबकी जीत नहीं है। गांधीजीने कहा कि कल मैं फिर यही सवाल पूछूँगा और जवाबके लिअे रुकूँगा।

जब अेक आदमीने गरम शब्दोंमें पंजाबके हिन्दुओंकी मुसीबतोंका ज़िक्र किया, तो गांधीजीने कहा कि गरम शब्द कहकर आप पंजाबके आँसू नहीं पोंछ सकते। मैंने तो मुझमें जितनी भी शक्ति है, वह सब पंजाब, बिहार और नोआखालीके मुसीबतज़दा लोगोंकी सेवामें लगा दी है।

३-४-'४७

आज शामको भी जब प्रार्थना-सभामें आये हुअे कुछ लोगोंने क़ुरानकी आयतें पढ़नेपर अेतराज़ किया तो गांधीजीने फिर अपनी प्रार्थना बन्द कर दी। अुन्होंने हाज़रीनको सलाह दी कि वे कुछ मिनट मौन रहकर शान्तिके साथ अपने-अपने घर चले जायँ। अुन्होंने कहा कि भगवान्को याद करने और दिलको पाक करनेके लिअे प्रार्थना की जाती है, अिसलिअे हम मौन रहकर भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रार्थना शुरू करनेसे पहले गांधीजीने कहा कि मुझे अेक खत मिला है, जिसमें लिखा है कि या तो मुझे प्रार्थनामें क़ुरानकी आयतें पढ़ना बन्द कर देना चाहिये या फिर वाल्मीकि मंदिरको (जहाँ मैं ठहरा हूँ) खाली कर देना चाहिये। सभामें आये हुअे लोगोंसे गांधीजीने पूछा कि क्या आप लोगोंमेंसे किसीको मेरे क़ुरानकी आयतें पढ़नेपर आपत्ति है? जब कुछ लोगोंने अपने हाथ ऊँचे किये और कहा कि अगर क़ुरानकी आयतें पढ़ी जायँगी, तो हम आपको प्रार्थना नहीं करने देंगे, तो गांधीजीने प्रार्थना न करनेका फ़ैसला किया।

अपनी तक़रीरके दरमियान गांधीजीने लोगोंसे पूछा कि पिछले दिन जो कुछ कहा गया था अुसके सत्य और सौंदर्यको आप लोगोंने समझा? जिस कामको करना मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ, अुससे मुँह मोड़ लूँ, अैसा शख़्स मैं नहीं हूँ। मगर मेरी अहिंसाका तक़ाज़ा है कि अगर अेक बच्चा भी मेरे प्रार्थना-सभा भरनेपर आपत्ति करे, तो मुझे अुससे हाथ खींच लेना चाहिये। मगर अिसे किसी भी क़िस्मकी बुज़दिली नहीं समझना चाहिये। व्यर्थके वादविवाद और हिंसासे बचनेके लिअे ही मैं प्रार्थना नहीं करता। हिंसा करना शैतानका काम है और मैं अपनी ज़िन्दगीभर अुसके खिलाफ़ लड़ता रहा हूँ।

गांधीजीने आगे कहा कि जो लोग मेरे प्रार्थना-सभा करनेके खिलाफ़ हैं, अुनसे मैं कहूँगा कि वे या तो यहाँ आयें ही नहीं या अगर आयें ही, तो वे अकेले मेरे पास आयें और चाहें तो अिस तरीक़ेसे प्रार्थना करनेके लिअे मुझे मार डालें। आप चाहे मुझे मार भले डालें, मगर मैं राम और रहीमका नाम रटना नहीं छोड़ूँगा। मेरे लिअे ये अेक ही भगवान्के दो नाम हैं। अिन दो नामोंको जपते-जपते मैं हँसते हुअे अपनी जान दे दूँगा।

गांधीजीने लोगोंसे पूछा कि अगर मैं राम और रहीमके नाम लेना छोड़ दूँ, तो मैं नोआखालीके हिन्दुओं और बिहारके मुसलमानोंको अपना मुँह कैसे दिखा सकूँगा? आपमेंसे जो लोग चाहते हैं कि प्रार्थना हो, अुन्हें चाहिये कि वे अड़चन डालनेवालोंपर गुस्सा न हों, न अुनसे द्वेष करें, बल्कि अुनपर तरस खायँ। गुस्सा करने और बदला लेनेका अिरादा रखनेसे हिन्दू-धरमकी कोअी सेवा नहीं हो सकती।

गांधीजीके प्रार्थना-सभासे रवाना होते ही श्रोताओं (हाज़रीन)के दो दल आपसमें झगड़ने लगे, अिसलिअे गांधीजी ठहर गये और अुन्होंने १५ मिनट तक खड़े-खड़े भीड़के सामने तक़रीर की। अुन्होंने कहा कि गुस्सा करनेसे कोअी फ़ायदा नहीं। अिसके बदले आपको सोचना चाहिये कि पंजाबके घाव भरनेका अच्छे-से-अच्छा तरीक़ा क्या हो सकता है। आप किसीको गाली न दें, क्योंकि अैसा करना आपके मज़हबके खिलाफ़ है।

४-४-'४७

सबसे पहले गांधीजीने पूछा कि आजकी प्रार्थना-सभामें क़ुरानकी आयतें पढ़नेपर अेतराज़ करनेवाले कोअी हैं? हिन्दू महासभाके एक मेम्बरने दरख़ास्त की कि मैं पिछले तीन दिनोंकी घटनाओंकी माफ़ी माँगनेके लिअे कुछ शब्द कहना चाहता हूँ। मेरा और मेरे साथी मेम्बरोंका अिस तरहके बरतावसे कोअी ताल्लुक़ नहीं है। प्रार्थना-सभा मतभेद प्रकट करनेकी जगह नहीं है। अगर किसी बातपर आपको गांधीजीसे झगड़ना है, तो आप बाहर झगड़िये। मैं हाज़रीनसे अपील करता हूँ कि वे शान्त रहें और बिना अेतराज़ किये या अड़चन डाले प्रार्थना होने दें।

सभामें सिर्फ़ अेक ही आदमी अैसा था, जिसने हिन्दू मन्दिरमें की जानेवाली प्रार्थनाके साथ क़ुरानकी आयतें पढ़नेपर अेतराज़ किया। गांधीजीने कहा कि अैसा अेतराज़ तो अिस जगहके हरिजन ही अुठा सकते हैं। अिसपर अुस आदमीने अपना विरोध वापस ले लिया। गांधीजीने कहा कि पिछले तीन दिनों तक जो कुछ यहाँ होता रहा, अुससे यहाँके हरिजन रंजीदा हैं। वे मेरे छोटे भाअी हैं। मैं अेक भंगी हूँ और अेक सच्चे भंगीका और अिसलिअे अेक सच्चे हिन्दूका यह फ़र्ज़ है कि वह सिर्फ़ जिस्मका ही मैल साफ़ न करे, बल्कि दिमाग और रूहकी सारी गन्दगीको भी साफ़ करदे। सच्चा हिन्दू हर मज़हबमें सत्यके दरशन करता है। क़ुरानकी जो आयत यहाँ प्रार्थनामें पढ़ी जाती है, अुसका सार हर मज़हबमें पाया जाता है।

गांधीजीने कहा कि आज रावलपिण्डीसे कुछ दोस्त मेरेपास आये और अुन्होंने वहाँ होनेवाले ज़ालिमाना कारनामोंका बयान किया। वे मेरी सेवा, मदद और रहनुमाअी चाहते हैं। क़ुरानकी आयतें पढ़नेपर यहाँ अेतराज़ किये जानेकी बात अुनकी समझमें नहीं आअी। मुसलमानोंने भी मुझे प्रार्थना सभा करनेसे कभी नहीं रोका; अुनमेंसे कुछने अिस आयतके पढ़े जानेपर अेतराज़ अलबत्ता किया था।

www.vinoba.in

हिन्दुओंके वेद हजारों बरस पुराने हैं। अितने ही पुराने अुनके अुपनिषद हैं, मगर अुनको लोग पूरी तरहसे नहीं जानते। अिनमेंसे किसी भी धर्मग्रन्थमें जो खराबियाँ घुस आअी हैं, वे अुसके बहुत बरसों बाद लिखे जानेकी वजहसे है। हिन्दू मज़हब अेक महान् मज़हब है। अुसमें बेहद सहिष्णुता और दूसरे मज़हबोंको अपनेमें समा लेनेकी ताक़त है। जैसा कि सवाल पूछनेवाले किसी नौजवानसे अेक हरिजन सन्यासिनीने कहा है कि अीश्वर सब जगह है। वह अिन्सानके दिलपर हुकूमत करता है। वह सिर्फ़ अनन्य भक्ति चाहता है, फिर वह भक्ति किसी भी शकलमें और किसी भी ज़बानमें की जाय। अिसलिअे कुरानशरीफ़की अुस महान् आयतके पढ़े जानेपर अेतराज़ करना हिन्दू धरमके खिलाफ़ ही नहीं, बल्कि अधर्म है।

अिसके बाद पूरी प्रार्थना हुअी। प्रार्थनाके बाद गांधीजीने सभाके सामने फिर तक़रीर की।

अुन्होंने कहा कि अिस खयालसे मुझे बहुत धक्का पहुँचा है कि तीन दिनों तक हम लोग प्रार्थना नहीं कर सके और कुछ लोगोंके नासमझी-भरे अेतराज़के कारण सैकड़ों आदमियोंको नाअुम्मीद होना पड़ा। मगर, यदि यहाँ आये हुअे लोगोंके दिलोंमें प्रार्थना होती, तो वे अुसकी कमीको सचमुच महसूस ही नहीं करते। मैं खुद अेतराज़ करनेवालोंका अहसानमन्द हूँ, क्योंकि अुन्होंने मुझको अपना दिल टटोलने या आत्मनिरीक्षण करनेका काफ़ी मौक़ा दिया है। मैंने अपने आपसे पूछा कि, चूँकि मैं अुनको खामोश न कर सका, अिसलिअे अुनके खिलाफ़ कोअी बात तो मेरे दिलमें नहीं है? अगर आज गाये गये भजनका असली मतलब आप समझ गये हैं, तो आप जान गये होंगे कि भगवान् जो कुछ भी दे, अुसे वरदान मानकर ही ले लेना चाहिये। अिसलिअे मुझे खुशी है कि मैं अिस अिम्तहानमें पास हो गया। अगर तीन चार शख़्सों ने मुझे यह धमकी भी दी होती कि अगर मैं अेक ही साँसमें राम और रहीम दोनोंके नाम लूँगा, तो वे मुझको मार डालेंगे, तो मुझे अुम्मीद है कि मैं अुन्हीं नामोंको रटते हुअे हँसते-हँसते मर जाता।

गांधीजीने आगे कहा कि नोआखालीमें रामधुन गाना मुश्किल बात थी, मगर वहाँपर भी मैं अपनी हमेशाकी प्रार्थना जारी रख सका। अगर आपके दिलोंमें गुस्सा या द्वेष न रहे, तो आखिरकार सब कुछ ठीक हो जाता है। अरबी ज़बानमें भगवानका नाम लेना पाप कैसे हो सकता है? गांधीजी ने लोगोंसे बिनतीकी कि अपने अमर धर्मग्रन्थोंको अधूरा समझकर आप लोग हिन्दू धरमको ज़लील न करें। हरएकको मनमाने तरीक़ेसे प्रार्थना करनेकी आज़ादी रहनी चाहिये।

कुछ लोगोंका अन्दाज़ है कि मैं यहाँ दिल्लीमें बड़े कामोंमें अुलझ गया हूँ और मुसीबतज़दा जगहों को मैंने भुला दिया है। अेक अीश्वर ही जानता है कि नोआखाली, बिहार और अब पंजाबमें लोगोंने जो पागलपन किया है, अुससे मेरे दिलको कैसी चोट पहुँची है और मुझे कितना रंज हुआ है। मैं आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि मैं चाहे जहाँ रहूँ, मैं अुन्हीं जगहोंके लिअे काम कर रहा हूँ। वायसरायसे बातचीत करते हुअे भी मुझे अुन्हींका खयाल रहा है। हिन्दू-मुसलमानोंके बीच अेकता क़ायम करनेसे बड़ा काम मेरे लिअे कोअी नहीं है। अगर मैं नोआखाली, बिहार या पंजाबको भूल जाअूँ, तो मैं हिन्दुस्तानकी सेवा नहीं कर सकता। मैं खुदाका बन्दा होनेका दावा करता हूँ। खुदाकी मर्ज़ीके बिना न मैं कुछ खाता, न पीता और न कोअी काम ही करता हूँ। शायद वक़्त आनेपर आप लोग मेरे कामको ज़्यादा अच्छी तरह समझेंगे। तबतक भगवान् मुझे जहाँ ले जाय, वहीं रहकर मुझे अपना फ़र्ज़ अदा करते रहना चाहिये।

५-४-'४७

प्रार्थना शुरू करनेके पहले गांधीजीने आज फिर पूछा कि सभामें कोअी अैसा शख़्स तो नहीं है जो यह चाहता हो कि मैं रोज़की मामूली प्रार्थना न कहूँ? मुझे यह जान कर खुशी होती है कि आजकी सभामें अैसा कोअी आदमी नहीं है। मैं आपको अेक बार फिर याद दिलाता हूँ कि अेक धर्मको दूसरे धर्मसे बेहतर समझना बेवकूफ़ी है। हमें सब धर्मोंको समान मानना चाहिये। मुझे यक़ीन है कि बंगाल, बिहार और पंजाबकी पिछली दर्दनाक घटनायें आज देशमें चारों तरफ़ फैली हुअी नफ़रतकी वजहसे ही हुअी हैं। आप तूफ़ानके बीच भी शान्त बने रहेंगे तभी आपकी ताक़त बढ़ेगी। आपको याद होगा, खिलाफ़त आन्दोलनके दिनोंमें जब हिन्दू और मुसलमान कन्धे-से-कन्धा भिड़ाकर विदेशी हुकूमतसे लड़े थे, मौलाना मोहम्मदअलीने कहा था कि चरखा हमारा सबसे बड़ा हथियार है और काते हुअे सूतकी गुण्डियाँ हमारी ज़ोरदार गोलियाँ हैं। कांग्रेस खिलाफ़त आन्दोलनमें सिर्फ़ अेक ही शर्त्तपर शामिल हो सकती थी। वह यह कि मुसलमान अहिंसक ढंगसे लड़ें। और यह शर्त्त अल्लाहके नामपर खुशी-खुशी मंज़ूर कर ली गअी थी। अुसी अहिंसक लड़ाअीका यह नतीजा है कि आज हिन्दुस्तान आज़ादीके दरवाज़ेपर खड़ा है।

गांधीजी ने सभामें आये हुये लोगोंको याद दिलाया कि कल क़ौमी हफ़्तेकी शुरूआतका दिन है। मद्रासमें अेक रात सपनेमें मुझे २४ घण्टेके अुपवासका विचार आया था। मैंने अिसपर राजाजीकी सलाह ली, जिनका मैं अुस वक़्त मेहमान था। राजाजीको मेरा अुपवासका विचार जँचा और तुरत नोटिस निकाले गये। देशके कोने-कोनेमें लोगोंने अुसका दिली स्वागत किया। मुझे सपनेमें भी यह खयाल नहीं आया था कि देश अितना जग गया है। देशसे मेरा मतलब हिन्दुस्तानके थोड़ेसे शहरोंसे नहीं, बल्कि अुन ७ लाख गाँवोंसे है, जहाँ ज़्यादातर हिन्दुस्तानी बसते हैं। मेरी यह अपील है कि आप फिर अेकबार अुस पुकारको सुनें, बशर्ते आप अुसके सच्चे मतलबको समझ लें। अुन दिनोंमें हिन्दू-मुस्लिम अेकता, चरखा, वगैरहके ज़रिये स्वराज क़ायम करनेके लिअे अुपवास किया गया था। लेकिन आज तो अफ़सोसके साथ यह कहना पड़ता है कि कांग्रेसका तिरंगा झण्डा जिसकी नुमाअिन्दगी करता है वह हिन्दू-मुस्लिम-सिक्ख अेकता और चरखा मेरी मामूली झोंपड़ीके सिवा और कहीं दिखाअी नहीं देते। हर हालतमें, आपको यह सोचना चाहिये कि गृह-युद्ध या खानाजंगीका क्या मतलब है, और जो कुछ हुआ अुसे माफ़ करके भूल जाना चाहिये। आपको नोआखाली, बिहार और पंजाबकी दर्दनाक और वहशियाना वारदातोंके लिअे अपने दिलोंमें कोअी बैर नहीं रखना चाहिये। पहलेसे भी ज़्यादा आज मेरा यह पक्का विश्वास है कि चरखा अहिंसाकी सबसे सच्ची निशानी या प्रतीक है। अेक यही अैसी चीज़ है जिसने हमेशा अपने संगीतसे लोगोंको धीरज बँधाया और दुखियोंको आराम पहुँचाया है। अिसलिअे अगर आप सचमुच आजके ज़हरीला लावा अुगलनेवाले नफ़रतके ज्वालामुखीको शान्त करना चाहते हैं, तो मुझे आशा है कि आप सच्ची भावनासे अुपवास करनेमें मेरा साथ देंगे। अुपवासका अर्थ सिर्फ़ जुलूस निकालना और झण्डा फहराना ही नहीं है; अुसमें और भी बहुतसी महत्त्वकी बातें समाअी हुअी हैं।

गांधीजीने कहा कि अगर मुसलमान अपने साथ रहनेवाले हर हिन्दुस्तानीको अपना भाअी समझें, तो सारा हिन्दुस्तान पाकिस्तान बन सकता है। लेकिन अगर हिन्दुस्तानका मतलब सिर्फ़ हिन्दुओंका वतन और पाकिस्तानका मतलब सिर्फ़ मुसलमानोंका वतन हो, तो पाकिस्तानमें हमेशा हिंसा और नफ़रतका ज़हर बहता रहेगा। मेरा सपनोंका देश तो प्रेमकी नदियोंसे सींचा जायगा।

अिसके बाद गांधीजीने दर्दभरे शब्दोंमें दीनबन्धु अेण्ड्रूज़का ज़िक्र किया, जिनकी पुण्य-तिथि ५ अप्रैलको पड़ती है। अुन्होंने कहा कि हिन्दुस्तानके अैसे दोस्तकी यादमें कोअी खास बात कहनेकी ज़रूरत नहीं, क्योंकि अुनकी याद हमेशा ताज़ा बनी रहेगी। वे दिलसे हिन्दुस्तानी होते हुअे भी सच्चे अंग्रेज़ थे।

आखिरमें गांधीजीने कहा कि मुझे राष्ट्रीय सेवा-संघकी तरफ़से अेक खत मिला है, जिसमें यह कहा गया है कि पिछले तीन

www.vinoba.in

दिनोंमें प्रार्थनाका जो विरोध किया गया था, अुससे अुनका कोअी सम्बन्ध नहीं है। मुझे यह जानकर .खुशी हुअी और मैं अिसपर विश्वास करता हूँ। मैं वह खत प्रेसमें दूँगा। जो संस्था खुले आम काम नहीं करती, वह किसीकी जान या धर्मकी रक्षा नहीं कर सकती।

६-४-'४७

प्रार्थनाके बादके अपने भाषणमें गांधीजीने सभामें गाये गये सुन्दर बँगला भजन और राम-धुनकी ओर लोगोंका ध्यान खींचा, जिसमें राम और रहीम, कृष्ण और करीमके नाम शामिल थे। अुन्होंने कहा कि जब ये गाये जारहे थे, मेरी आँखोंके सामने नोआखालीका दृश्य या नज़ारा खड़ा हो गया। यह भजन अक्सर वहाँ गाया जाता था। कभी-कभी यह भजन और राम-धुन हमारे अेक गाँवसे दूसरे गाँव जाते वक़्त भी गाये जाते थे।

आज क़ौमी हफ़्तेका पहला दिन है, जब अुपवास और प्रार्थना की जानी चाहिये। आज शामके ३ से ४ के बीच सूत-यज्ञ हुआ, जिसमें कांग्रेसके सदर, अुनकी पत्नी, जवाहरलालजी और दूसरे नेताओंने भाग लिया। अुपवास जल्दी ही खत्म होगा। लेकिन आज आप आज़ादीके लिअे फिर जो त्याग कर रहे हैं, अुसका अगर यह नतीजा हो कि राम और रहीमके नाम और भजनका सन्देश आप लोगोंके दिलोंमें हमेशाके लिअे घर कर जायँ, तो कितना अच्छा हो! कुछ लोग मुझे गालियाँ देते हैं, कुछ लोग सोचते हैं कि मैं अितना बड़ा आदमी होगया हूँ कि अुनके खतोंका जवाब भी नहीं देता। दूसरे मुझपर दिल्लीमें मज़ा मारनेका अिलज़ाम लगाते हैं, जब कि पंजाब आगकी लपटोंमें जल रहा है। ये लोग कैसे समझें कि मैं जहाँ रहता हूँ, वहाँ दिन और रात अुन्हींके लिअे काम करता हूँ? मैं अुनके आँसू नहीं सुखा सकता। अेक भगवान् ही यह कर सकता है। लेकिन जब कभी भीतरकी आवाज़ आयेगी, मैं अेकदम पंजाब चला जाअूँगा। आज देशकी दोनों जातियोंमें नफ़रत और बदलेकी जो भावना फैली हुअी है, अुससे मुझे बड़ा दुःख होता है। मैं आप लोगोंको यह चेतावनी देता हूँ कि अगर आपने अपने दिलोंको शान्त और पाक नहीं बनाया, तो आप सारे देशमें हिंसाकी वह आग भड़का देंगे जो आपको जलाकर राख कर देगी। महाभारतकी कथा आप सबको याद होगी। वह हिन्दुस्तानका नहीं, बल्कि मानवका अितिहास या तारीख है। वह पुण्य और पापके प्रतीक (निशानी) राम और रावणको पूजने वालोंके बीचकी लड़ाअीकी कहानी है। सगे भाअी होकर भी पाण्डव और कौरव आपसमें लड़े और लड़ाअीका नतीजा क्या हुआ? पापकी निशानी रावण सचमुच मारा गया। लेकिन लड़ाअीकी कहानी कहनेके लिअे सिर्फ़ सात विजेता बचे। हमारे देशकी आज यही हालत है।

आज बूढ़े और बहादुर राष्ट्रीय मुसलमान ख़्वाजा अब्दुल मजीद मुझसे मिलने आये थे। भगवान् करे, वे पुराने अच्छे दिन फिर लौट आयें, जब देशके हिन्दुओं और मुसलमानोंमें दिली अेका था। आज तो बिहारमें हिन्दुओंने राष्ट्रीय मुसलमानोंको मारा और अिस्लामके सच्चे दोस्त हिन्दुओंको मुसलमानोंने क़त्ल किया है।

सभामें आये हुअे लोगोंको समझाते हुअे गांधीजीने आगे कहा कि थोड़ी देर ठहर कर यह तो सोचिये कि आप किधर जा रहे हैं। सारे हिन्दू भाअियोंसे मेरी बिनती है कि मुसलमान आप सबको बरबाद करना चाहें, तब भी आप अुनके खिलाफ़ अपने दिलमें गुस्सेको जगह न दें। मौतसे किसीको डरना नहीं चाहिये। हर अिन्सानको मरना ही होगा। मौतसे कोअी बच नहीं सकता। लेकिन अगर आप हँसते-हँसते मरेंगे, तो आप नअी ज़िन्दगी पायेंगे — आप नये हिन्दुस्तानको जनम देंगे। गीताके दूसरे अध्यायके आखिरी श्लोकोंमें यह बताया गया है कि अीश्वरसे डरनेवाले अिन्सानको किस तरह रहना और ज़िन्दगी बिताना चाहिये। मैं चाहता हूँ कि आप अुन श्लोकोंको पढ़ें, अुनपर ध्यान दें, अुनसे सबक़ लें और हर श्लोकके अर्थको दिलमें बैठा लें। तब आप समझेंगे कि आपके आदर्श क्या थे और आज आप अुनसे कितनी दूर जा पड़े हैं। आज़ादीके आनेके वक़्त आप .खुदसे यह तो पूछें कि क्या आप आज़ादी पानेके हक़दार हैं और पाअी हुअी आज़ादीको टिकाये रखनेकी क़ाबलीयत आपमें है?

(अंग्रेज़ीसे)

---

*'क्लाअिव्हसे केअिन्स तक'

[हालमें छपी अपनी छोटीसी क़िताबका शीर्षक समझाते हुअे प्रो० कुमारप्पाने नीचेका अेक छोटा नोट भेजा है, जो पढ़नेवालोंको सचमुच दिलचस्प मालूम होगा। अिस क़िताबका हिन्दुस्तानी तरजुमा जल्द ही छपनेवाला है। — संपादक]

लॉर्ड क्लाअिव्हको आम तौर पर हिन्दुस्तानमें ब्रिटिश सामराजकी नींव डालनेवाला कहा जाता है।

रॉबर्ट क्लाअिव्ह सन् १७२५में पैदा हुआ था और सन् १७७४में अुसकी मृत्यु हुअी। जब वह बच्चा था, अुसके मास्टरोंको अुसके पढ़ने-लिखनेके बारेमें बिलकुल नाअुम्मेदी हो गअी थी। १८ वर्षकी अुमरमें अुसे 'अीस्ट अिण्डिया कम्पनी'का मुंशी या क्लर्क बनाकर भेजा गया था। अपनी ३५ सालकी अुमरमें जब वह अिंग्लैण्ड लौटा, तो अुसने ३ लाख पौंडकी मोटी रकम अिकट्ठा कर ली थी और अुसकी सेवाओंके बदलेमें कंपनीने अुसे २७ हज़ार पौंड सालाना पेंशन बाँध दी थी। अिस लुटेरे राजनीतिज्ञने सरकारी मालियात और अीमानदारीके जो सिद्धान्त या अुसूल क़ायम कर दिये थे, हिन्दुस्तानकी सरकार आज तक अुन्हींपर चल रही है।

लॉर्ड केअिन्स — बीसवीं सदीके शुरूआतसे ही ब्रिटेनके अन्तर-राष्ट्रीय और देशके भीतरी मालियातपर लॉर्ड केअिन्सका गहरा असर रहा है।

जॉन मेनार्ड केअिन्स सन् १८८४में पैदा हुआ और हाल ही १९४६में मरा है। जंग खत्म होनेपर सन्धिकी शर्तें तय करना, हारे हुअे मुल्कोंसे हरजाना लेना, लड़ाअी सम्बन्धी क़र्ज़ चुकाना, ब्रिटेनके मालियातमें चलनमेंसे नोटोंकी तादाद घटानेकी नीति अख़्तियार करना, अिन सबके पीछे केअिन्सकी बुद्धि काम करती थी। और ब्रेटन वुड्स कान्फरेन्सका तो वह रहनुमा ही था।

ब्रिटेनके तरीक़ोंपर चलनेवाले हिन्दुस्तानके सरकारी मालियातपर पड़ा हुआ अुसका असर भी कम अहमियत नहीं रखता। आजसे ३४ बरस पहले अुसने 'अिण्डियन करन्सी ॲण्ड फाअिनॅन्स' (हिन्दुस्तानी चलन और सरकारी मालियात) नामकी क़िताब लिखी, तबसे हिन्दुस्तानके मालियातपर अुसका असर पड़ने लगा।

अिस परम्पराका पहला शख़्स क्लाअिव्ह था और हमें अुम्मीद करनी चाहिये कि लॉर्ड केअिन्सके अिस लुटेरी परम्पराका अन्त हो जायगा।

(अंग्रेज़ीसे)

---

* क्लाअिव्ह टु केअिन्स, लेखक: जे० सी० कुमारप्पा, क़ीमत बारह आने; नवजीवन पब्लिशिंग हाअुस, अहमदाबाद।

विषय-सूची

		पृष्ठ
दुनियाको अेक करनेकी कोशिश कीजिये	... गांधीजी	९७
ज़रूरी काम पहले किये जायँ	... जे० सी० कुमारप्पा	९८
नोआखालीके बारेमें	...	९९
अेशियाका पैग़ाम	... गांधीजी	१००
अुद्योग-धन्धोंकी हिफ़ाज़त	... जे० सी० कुमारप्पा	१०१
गांधीजीकी दिल्लीकी डायरी	...	१०१
टिप्पणी —		
'क्लाअिव्हसे केअिन्स तक'	... जे० सी० कुमारप्पा	१०४

www.vinoba.in